हिंदी की अभिलाषा

मैं हूँ हिंदी संपन्न भाषा,
पूरे भारत की राजभाषा,
मानो न मानो, मैं ही राष्ट्रभाषा ।
दुनिया की भाषा बनना मेरी आशा ।
यही मेरी आशा, यही अभिलाषा ॥

देश-विदेशों में भारत हो ऊँचा,
सर्वोपरि हो सत्य अहिंसा,
चाहूँगी मैं सभी हिंदी बोलें,
पुरातन ग्रंथों को सभी खोलें,
यही मेरी आशा, यही अभिलाषा ।।

सोने की चिड़िया देश हमारा,
सारे मुल्कों में सबसे न्यारा,
विद्रोहियों से इसको बचाओ,
विश्व में शांति का दीया जलाओ।
यही मेरी आशा, यही अभिलाषा।।

भारत संस्कृति परिचायिका हूँ,
परदेसियों की संमोहिका हूँ,
भारतवासी, मुझे अपनाओ,
मैं ही सबकी उद्धारिका हूँ,
परिचायिका हूँ उद्धारिका हूँ।

राजनैतिक पर्दा पूरा हटाओ,
निस्वार्थ होकर सोच-विचारो,
हिंदी-सूत्र में प्रांतों को बांधो,
सपनों के भारत को सत्य बनाओ,
यही मेरी आशा, यही अभिलाषा।।

रचयिता :

आर.बाबूराज जैन/ C/O R.BABURAJ JAIN

पी.जी.टी.(हिंदी) & अतिरिक्त एन.सी.सी. अधिकारी/PGT(HINDI) & ANO

जवाहर नवोदय विद्यालय, कालापेट (पुदुच्चेरी)/ JAWAHAR NAVODAYA VIDYALAYA,KALAPET (PUDUCHERRY)